होली का असली अर्थ: बाहर के रंग, भीतर का दहन- आचार्य प्रशांत

Digital Desk 04 | 2 Mar 2026 6:35 PM

- **आचार्य प्रशांत**

हर साल होली आती है, हर साल होलिका जलती है, और हर साल रंग-गुलाल उड़ता है, मित्र मिलते हैं, हर्ष होता है। यह सब ठीक है, यह सब होना चाहिए। पर इन सब के साथ में कुछ और भी होता है जो नहीं होना चाहिए। रंग खेलना उत्सव है, पर उसकी आड़ में यदि कोई महिलाओं से अभद्रता करे तो वो उत्सव नहीं है। जानवर काटना होली नहीं है। तीर्थों पर विदेशी पर्यटकों के साथ अभद्रता की जो खबरें आती हैं, वह तीर्थ का अपमान है। और यह प्रश्न कम ही लोग पूछते हैं कि यह विकृति कहाँ से आई। इससे भी गहरा प्रश्न यह है कि होलिका जलती रहती है हर साल, तो बुझती क्यों नहीं? जिसे एक बार जलाया, वह हर साल वापस क्यों लौटता है?

इस प्रश्न का उत्तर उस कथा में छुपा है जिसे हम जानते तो हैं, पर जिसे हमने शायद कभी समझा नहीं। हिरण्यकशिपु, यह नाम ही सारी शिक्षा दे देता है। 'हिरण्य'माने सोना, धन, स्वर्ण-प्रभा जैसी चकाचौंध।

‘कशिपु’माने शैया, बिस्तर। जो अपने आप को सुख की, स्वर्ण की, धन की शैया देना चाहता हो, वह हो गया हिरण्यकशिपु। यह किसी राजा का नाम नहीं है। यह उस सिद्धांत का नाम है जो हर मनुष्य के भीतर बैठा है और जो हर समय यही माँगता रहता है: सुख-सुविधा, सुरक्षा, स्वर्ण। यह अहंकार है। हिरण्यकशिपु अहंकार का प्रतीक है।

और यह भी कम महत्वपूर्ण नहीं कि हिरण्यकशिपु ऋषि-वंश से था। रावण भी ऋषि की संतान था। यह संकेत बहुत गहरा है: कैसे श्रुति-धर्म, लोक-धर्म बन जाता है। ऋषियों ने जो दिया, उसी से हिरण्यकशिपु निकला। उसी से रावण निकला। जो सत्य की ओर ले जाने के लिए था, वह अहंकार की सेवा में लग गया।

अहंकार के बारे में एक भ्रम है जिसे तोड़ना ज़रूरी है: यह समझा जाता है कि अहंकार आलसी होता है, तामसिक होता है। नहीं। अहंकार बड़ा मेहनती हो सकता है। हिरण्यकशिपु ने अद्भुत तपस्या की। गीता के सातवें अध्याय में श्रीकृष्ण कहते हैं: यत्न तो बहुत करते हैं, पर सिद्धि के लिए यत्न करने वाला हज़ारों में एक होता है। हिरण्यकशिपु ने यत्न किया, पर किसलिए? सिद्धि के लिए नहीं, आत्म-रक्षा के लिए। रावण ने भी तपस्या की। दुर्गा सप्तशती में जितने दानवी चरित्र हैं, वे सब तपस्या किए बैठे थे, वरदान पाए बैठे थे। अहंकार सोना पड़े तो सोएगा, जागना पड़े तो जागेगा, रोना पड़े तो रोएगा। सब कुछ कर सकता है। बस एक शर्त है: यह सब वह करता है अपनी रक्षा के लिए, खुद को बचाने के लिए। इसलिए केवल मेहनत को ही श्रेष्ठता का प्रमाण नहीं माना जा सकता।

तो हिरण्यकशिपु ने तपस्या की और ब्रह्मा से वरदान माँगे। इन वरदानों में एक गहरा इशारा है। “दिन में भी सुरक्षा, रात में भी। न महल के भीतर मृत्यु, न बाहर। न अस्त्र से, न शस्त्र से। न धरती पर, न आकाश में। न नर द्वारा, न पशु द्वारा।” शर्तें चार-पाँच हैं, पर इशारा एक है: सब तरीके के द्वैतों में मैं सुरक्षित रहूँगा।

यही अहंकार की मूल रणनीति है। अहंकार द्वैत में जीता है और द्वैत में ही सुरक्षा पाता है। जहाँ दो हैं, वहाँ अहंकार को कोई नहीं मार सकता। ‘मैं’और ‘तुम’, ‘भीतर’और ‘बाहर’, ‘दिन’और ‘रात’: इन्हीं द्वंद्वों की दरारों में अहंकार छुपकर बैठता है। इसीलिए हिरण्यकशिपु ने माँगा कि द्वैत की हर सीमा पर मुझे सुरक्षा मिले।

पर यह सुरक्षा-कवच माँगने की ज़रूरत क्यों पड़ी? क्योंकि भीतर से डरा हुआ है। जो झूठ है, वह अमर नहीं हो सकता, और यह बात उसे भीतर से पता है। सच पूछें तो अहंकार ज़िंदा ही नहीं है, वह ज़िंदा होने का ढोंग करता है। उसे हमेशा खतरा लगा रहता है कि कहीं पोल न खुल जाए। इसीलिए तपस्या भी करता है तो बस इसी वरदान के लिए: मरूँ न। और न मरने के लिए वह द्वैत का आश्रय लेता है।
पर कितना भी आश्रय ले, भरोसा नहीं आता। अमर तो मात्र सत्य होता है। अहंकार सत्य नहीं है, तो अमरत्व का भरोसा उसे कभी नहीं आ सकता। तब वह एक और चाल चलता है: पूरे राज्य में घोषणा करवाता है कि मैं ही सर्वोच्च हूँ, मेरी ही पूजा होगी।

यहाँ अहंकार की एक विशेष और दुर्भाग्यपूर्ण क्षमता समझें। अहंकार स्वयं को वस्तु बना सकता है, अपने दो फाड़ कर सकता है। एक फाड़ को ‘ईश्वर’घोषित कर देता है और उसकी पूजा शुरू कर देता है, जबकि वह ईश्वर भी अहंकार का ही प्रक्षेपण होता है। जब वह सीधे अपने आप को आत्मा घोषित नहीं कर सकता, तो अपनी किसी

कहानी को, अपनी किसी परिभाषा को 'परमात्मा'घोषित कर देता है। हिरण्यकशिपु ने इसकी ज़रूरत नहीं समझी। उसने सीधे कह दिया: मैं ही ईश्वर हूँ।

यह दावा क्यों?

क्योंकि खुद को भरोसा नहीं आता। अहंकार जानता है कि वह झूठ है। इसलिए दूसरों की आँखों से अपनी पुष्टि चाहता है। जितने लोग कहेंगे कि हाँ, तुम ही सर्वोच्च हो, उतनी देर के लिए भरोसा आएगा। यह सब अहंकार की उस बुनावट का हिस्सा है जिसमें वह खुद को सीधे देखने से डरता है। "मैं खुद को देखूँ तो पोल खुल जाए, इससे अच्छा दूसरों से कहलवाऊँ।"पर जिनसे कहलवाया जा रहा है, वे स्वतंत्र नहीं हैं, वे उसी के भय में बँधे हुए विषय हैं। अहंकार यही करता है। वह उन्हीं से पूछता है जो उसे वही बताएँगे जो वह सुनना चाहता है। जो सचमुच स्वतंत्र है, उसे वह कभी पूछने नहीं जाएगा, क्योंकि स्वतंत्र व्यक्ति सच बोलेगा।

और तभी कुछ हुआ। इतने बड़े राज्य में, इतनी बड़ी घोषणा के बीच, एक नन्हा सा यथार्थ निकल आया: प्रह्लाद। वरदान पाने के बाद हिरण्यकशिपु ने सबको जीत भी लिया था। जो मारा न जा सके, उसे कौन रोकेगा? तीनों लोकों पर उसका राज था। इतनी बड़ी प्रजा मान रही थी कि हिरण्यकशिपु भगवान है। पर इस बच्चे ने कहा, "मैं नहीं मानता।"
अंधेरा कितना भी बड़ा हो, दीया उसमें ऐसा सुराख करता है कि अंधेरे की कोई हैसियत नहीं बचती। सामने अँधेरा बिछा हो और बीच में बत्ती टिमटिमा रही हो, तो आँख कहाँ जाकर ठहरेगी? बत्ती पर। इसीलिए अंधेरा प्रकाश से इतना जलता है।

हिरण्यकशिपु को उस बच्चे की बात पर उपेक्षा कर देनी चाहिए थी। इतने बड़े राजा, इतने बड़े वरदान, तीनों लोकों पर राज। एक छोटा सा बच्चा क्या बिगाड़ेगा? पर उपेक्षा नहीं कर पाया। क्योंकि वह दीया अपने ही घर का था, और एक छोटा सा दीया भी अहंकार के विशाल अंधेरे की जान ले लेता है।
और यह भी देखें: प्रह्लाद प्रजा से उठकर नहीं आया। वह हिरण्यकशिपु की अपनी औलाद है। यह संकेत बहुत गहरा है। मुमुक्षा, मुक्ति की आकांक्षा, अहंकार की अपनी कोख से पैदा होती है। बंधन है तभी तो मुक्ति की तड़प होती है। जिसे बंधन से समस्या ही नहीं, वह मुक्ति लेकर क्या करेगा? जहाँ बंधन सबसे घना होता है, वहीं से मुमुक्षा सबसे तीव्र उठती है। हिरण्यकशिपु महाबंधन है, इसीलिए प्रह्लाद वहीं पैदा हुआ।

फिर आई होलिका। जैसा भाई, वैसी ही बहन। जैसे तुम होते हो, वैसा ही तुम्हारा माहौल होता है; और जैसा माहौल होता है, वैसे ही तुम बने रहते हो। कुल-कुटुंब, यारी-दोस्ती का जो जमघट होता है, वह वास्तव में तुम्हें वैसा ही बनाए रखने के लिए होता है जैसा तुम होते हो। वह तुम्हें बढ़ने नहीं देगा, बदलने नहीं देगा। होलिका इसी का प्रतीक है।

होलिका ने सोचा भी यही था। प्रह्लाद के तीन और भाई थे। एक बागी है, तीन और न बन जाएँ। और यह बात प्रजा तक पहुंचे कि हिरण्यकशिपु के अपने घर में विद्रोह हो गया है, अहंकार यह नहीं सह सकता। एक दीया और दीये जला सकता है। होलिका के पास एक चोला था। उसे पहनकर वह आग में बैठती तो जलती नहीं। उसने सोचा: प्रह्लाद को गोद में बिठाकर आग में बैठ जाती हूँ, दोनों काम एक साथ हो जाएँगे। पर यह समझना ज़रूरी है कि यहाँ जिस आग की बात है, वह कोई साधारण आग नहीं थी।

यह विवेक की आग थी। विवेक का अर्थ है सार और असार में भेद कर पाने की क्षमता। यह वह आग है जो सब कुछ अंधाधुंध नहीं जला देती। इसे पता है क्या जलाना है और क्या बचाना है। यह नित्य-अनित्य में भेद जानती है, सत्य-असत्य में भेद जानती है। जैसा कबीर साहब कहते हैं, "सार-सार को गहि रहे, थोथा देय उड़ाय।"थोथे को जलाओ, सोने को बचाओ।

इसीलिए उस आग ने होलिका को जला दिया और प्रह्लाद को बचा लिया। अगर साधारण आग होती तो दोनों को जला देती। दोनों हाड़-माँस के हैं। पर यह विवेक-रूपी अग्नि थी। वह जानती थी कि क्या असार है और क्या सार।

और हम उस आग को समझे बिना क्या करते हैं? किसी के घर के सामने कुर्सी उठाकर फूँक दी, और कह दिया, "बुरा न मानो होली है।"यह विशिष्ट आग है जिसकी बात कथा कर रही है। उसे पहचाने बिना हम हर साल एक लगभग अर्थहीन अनुष्ठान दोहराते हैं।

होलिका के जाने के बाद हिरण्यकशिपु ने एक खंभा तपवाया और कहा: अब इसी में जलकर मर। तो उसी खंभे से नरसिंह प्रकट हुए। और द्वैत की जितनी शर्तें थीं, सब की सब काट दीं। भीतर और बाहर के बीच की चौखट पर मारा। दिन और रात के बीच की गोधूलि-बेला में मारा। न अस्त्र, न शस्त्र, नाखून से फाड़ा। न धरती, न आसमान, जाँघ पर रखकर बीच में फाड़ा।

यही अद्वैत है, वह जो द्वैत की हर शर्त को काट देता है।

अहंकार द्वैत के भीतर कितना भी सुरक्षित हो जाए, अद्वैत उसे फाड़ ही देगा। द्वैत का दुर्ग कितना भी विशाल हो, अद्वैत उसके ऊपर की बात है।

और नरसिंह प्रकट हुए कहाँ से? उसी खंभे से जो हिरण्यकशिपु ने खुद बनवाया था। जिसे वह जड़ समझता था, उसी में से उच्चतम चेतना प्रकट हुई। यही अद्वैत का तरीका है: वह तुम्हारे बिना चाहे तुम्हारी ज़िंदगी में घुस आता है।

वह ऐसी जगह सामने आता है जहाँ तुमने सोचा भी नहीं था। हिरण्यकशिपु क्या कभी स्वयं चाहता कि उसे मुक्ति मिले? वह कभी न चाहता। तो उसे लगभग धोखे से ही मुक्ति मिली: उसके अपने घर की औलाद से, उसके अपने भवन के खंभे से।

अद्वैत नियति है। तुम कितना भी बड़ा द्वैत का सुरक्षा-चक्र बना लो, सत्य किसी अनपेक्षित जगह से प्रकट होगा।

रंग उड़ाएँ, मित्रों को गले लगाएँ। उत्सव का यह बाहरी रूप निषिद्ध नहीं है। पर जो इस उत्सव का केंद्र है, उसे भी जानें। होली यही सिखाती है: जाओ अद्वैत की शरण में। साधारण चेतना द्वैतात्मक होती है। जब चेतना उठती है, तो वह पारमार्थिक अद्वैत-तल पर पहुँचती है। होली का अर्थ है: चेतना को उठाओ, भीतरी बेहोशी को कम करो। होली इसलिए है कि साल भर जो नशा चढ़ा रहा, वह आज उतरे। पर हम होली के दिन और नशा चढ़ा लेते हैं। जो उत्सव जागरण के लिए था, उसे हम बेहोशी का अवसर बना लेते हैं। इससे बड़ी विडंबना क्या होगी। द्वैत माने नशा, अद्वैत माने उस नशे का उतरना। नशा वह है जो तुम्हें सत्य से दूर रखे। द्वैत मूल असत्य है क्योंकि द्वैत के एक छोर पर सदा अहंकार बैठा होता है, और अहंकार झूठ है। अहंकार का विघलन ही अद्वैत है।

होली यह भी सिखाती है कि रिश्ते सत्य से बड़े नहीं होते। जिस चिता पर प्रह्लाद को चढ़ाया गया, वह उसके अपने बाप ने सजाई थी, और उस पर लेकर उसकी अपनी बुआ बैठी थी। रिश्ते तब तक चलते हैं जब तक परस्पर झूठ का आदान-प्रदान होता रहे। जिस दिन कोई सच्ची बात करने लगे, उस दिन यही रिश्तेदारी आग में झोंकने को तैयार हो जाती है। झूठ यही चाहता है: सच को जला दो। पर उस आग में सच को झोंकोगे, जलेगा झूठ ही। जली होलिका, प्रह्लाद बच गया।

प्रह्लाद और हिरण्यकशिपु, दोनों ने विरोध किया। पर दोनों के विरोध में आकाश-पाताल का अंतर है। हिरण्यकशिपु ने विरोध किया अपने अहंकार की रक्षा के लिए। प्रह्लाद ने विरोध किया सत्य के लिए। हिरण्यकशिपु ने कहा: सच को जला दो। प्रह्लाद ने कहा: तुम मेरे देह के पिता हो, पर सत्य से बड़े नहीं हो। खून का कोई भी रिश्ता सत्य से बड़ा नहीं होता।

अब वह मूल प्रश्न, जिसे हम कभी नहीं पूछते: होलिका एक बार जल गई, हिरण्यकशिपु एक बार मारा गया, तो हर साल होली क्यों मनानी पड़ती है? जो काम एक बार हो चुका, वह बार-बार क्यों करना पड़ता है?
क्योंकि हिरण्यकशिपु कोई व्यक्ति नहीं है। व्यक्ति मर जाए तो चला जाता है। हिरण्यकशिपु एक सिद्धांत का प्रतीक है। और सिद्धांत नहीं मरते। उस सिद्धांत का नाम है अहंकार। हर बच्चा जो पैदा होता है, वह अहम-वृत्ति लेकर पैदा होता है। एक मनुष्य मरे, अगला बच्चा पैदा हो, उसमें भी अहम-वृत्ति होगी। और यही नहीं: जो मरा नहीं, उसमें भी अहंकार वापस आता है। अहंकार रक्तबीज है: उसे कितना भी काटो, वापस उगता है।
मुक्ति कोई मंज़िल नहीं है, कोई एक पल नहीं जिसके बाद सब सिद्ध हो जाए। जब तक शरीर है, तब तक अहम-वृत्ति रहेगी और उसे बार-बार देखना पड़ेगा, बार-बार विवेक की आग जलानी पड़ेगी। इसीलिए एक निश्चित अंतराल पर, हर साल, यह उत्सव है। इसीलिए होली वापस आती है। यह केवल उत्सव नहीं, यह याद-दिहानी है: काम अभी पूरा नहीं हुआ। जब तक साँस चल रही है, तब तक माया का खतरा बना रहेगा।

कथाएँ इसीलिए रची गई थीं। जो ऋषियों ने जाना था, वह आम आदमी तक किस भाषा में पहुँचाया जाए? सैद्धांतिक बातें कठिन थीं। तो कथाएँ आईं, प्रतीक आए, उत्सव आए। पर अहंकार ने उन कथाओं का भी शोषण कर लिया। जो कथा अहंकार को ध्वस्त करने के लिए आई थी, उसे ही अहंकार ने पालतू बना लिया। यही होता है जब श्रुति-धर्म, लोक-धर्म बन जाता है।
तो आज होली के नाम पर जो विकृति है, वह अकारण नहीं है। कथा को न समझने का यही परिणाम होता है। जो

आग विवेक की थी, उसे हम लकड़ी की आग से बदल देते हैं। जो दहन भीतर का होना था, उसे हम बाहर निकाल देते हैं। कथा कहीं नहीं कहती कि आज बकरा काटो, महिलाओं से अभद्रता करो, नशे में डूबो। रंग खेलने से कथा को कोई आपत्ति नहीं। कथा कहती है: रंग खेलो, पर साथ में यह भी जानो कि आज असली काम क्या है। आज अहंकार काटो।

होली का संदेश सरल है, पर उसकी माँग कठिन है। भीतर के हिरण्यकशिपु को पहचानें। उस झूठे सुरक्षा-चक्र को देखें जो द्वैत के नाम पर बना रखा है। और उस विवेक की आग को जलाएँ जो सार को बचाए, असार को जलाए। यह आग तुम्हें तुम्हारे दोस्त नहीं जलाने देंगे, तुम्हारे रिश्तेदार नहीं जलाने देंगे, तुम्हारी आदतें नहीं जलाने देंगी। पर जलानी पड़ेगी। और खुद को जलाने देना पड़ेगा।
प्रह्लाद को बाहर मत खोजें। प्रह्लाद तुम्हें खुद होना पड़ेगा। तुम ही हिरण्यकशिपु हो और तुम्हें ही अपना प्रह्लाद होना पड़ेगा। अहंकार से ही मुमुक्षा उठती है। बंधन जब असह्य हो जाता है, तभी सच्ची तड़प उठती है। वह तड़प ही प्रह्लाद है।

हर साल होलिका वापस आती है क्योंकि हर साल हिरण्यकशिपु वापस आता है। वह हमारे भीतर है। और हर साल नरसिंह भी वापस आते हैं, किसी न किसी खंभे से, किसी न किसी अनपेक्षित जगह से। अद्वैत नियति है। वह आएगा। प्रश्न यह है कि जब वह आए, तो क्या हम पहचान पाएंगे?

आचार्य प्रशांत एक दार्शनिक और लेखक हैं। उनका कार्य आत्म-अन्वेषण और उसके समकालीन जीवन में अनुप्रयोग पर केंद्रित है।

देश

खबरें और भी हैं...

‘क्या तिरंगे का सम्मान दुनिया भर में बढ़ाना गद्दारी है?’, ‘नक्सलवाद’ पर नितिन नवीन बोले- राहुल गांधी का बयान देश के खिलाफ

देश, बड़ी खबर